विद्यालयीय बालको के लिए कला का महत्व
(Importance of Arts for School Children)

कला बालको की आत्म अभिव्यजना का विशिष्ट माध्यम है। इसका मौलिक स्वभाव तथा नियम हैं। कई दशको से शिक्षा व्यस्था मे कला के महत्व पर बार-बार चर्चा कि जा रही है और इसकी अनुशंशा की जाती रही है। विद्यालयीय स्तर पर बढ़ती हुई व्यहारगत समस्याओ का छात्रो के समाजिक समायोजन, जीवन कौशल के विकाश आदि जीवन-समन्वित व्यक्तित्व विकाश, सर्वागीण विकाश, मानसिक और संज्ञानात्मक विकाश आत्म प्रत्यय अपराध आदि पर गम्भीर प्रभाव पड़ता है। कला बालको के आत्माभिव्यक्ति आत्मपुष्टि के साथ-साथ मुल्यो के विकाश का साधन है। शिक्षा का उद्देश्य समाज और राष्ट्र के लिए आम नागरिको का विकाश करना हैं। यह उद्देश्य तभी प्राप्त हो सकता हैं। जब बालको को कला के लिए प्रोत्साहित किया जायें। कला व्यवहारगत समस्याओ को नियत्रित करने का सशक्त साधन है राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) द्वारा सन् 1975 में " The Curriculum For Ten Year School- A Frame work" नामक दस्तावेज में प्रकाशित किया गया कि प्राथमिक शिक्षा के मुख्य उद्देश्यो में सृजनात्मक क्रियाओ के द्वारा अभिव्यक्ति की योजना विकसित करना भी शामिल है। सृजनात्मकता कला का परिणाम है। राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली-1986 मे कला शिक्षा को माध्यमिक शिक्षा में एक अनिवार्य विषय के रुप मे अनुलग्न किया गया है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) ने राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रुपरेखा 2005 (NCF-2005) की अनुशंसाओं में विद्यालयो में कला शिक्षा के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डाला गया है। जिसके अनुसार माध्यमिक स्तर तक कला शिक्षा को अनिवार्य बनाया गया।

उपर्युक्त विवेचन के उपरान्त_विद्यालयीय बालको के कला शिक्षा के महत्व को विन्दुवार प्रस्तुत करना उचित होगा-

1. **उचित परम्पराओ का पोषण:-** उचित परम्पराए समाज को संगठित करती हैं। परम्परा होने पर समाज मे एकता रहती है। समाज मर्यादित रहता

है। प्राचीन भारतीय संस्कृती साहित्य कला ज्ञान-विज्ञान की परम्पराओं पर हम गर्व करते है। कला परम्पराओ का हस्तान्तरण करती है।

2. **अभिव्यजना की स्वतंत्रता:-** कला बालको को अभिव्यजना की स्वतंत्रता प्रदान करती है जिससे वह प्रेरित, उत्साहित और स्फुर्तिवान होता है। वह समाजिक कार्यो में रुचि लेने लगता है।

3. **सृजन की स्वतंत्रता:-** कला के दोत्र में सृजन की स्वतंत्रता उपलब्ध होती है। सृजन की स्वतंत्रता से बालक समाज की आवश्यक्ताओ को समझने में सक्षम बनता है। समाज को भी सृजन की स्वतंत्रता होती है कि उसके भावी नागरीक समाज विरोधी कार्यो में संलग्न न हो बल्कि समाजिक हितो की सुरक्षा के लिए प्रेरित हो।

4. **मानवीय भावो का आदान प्रदान:-** कला मानवीय भावो के आदान-प्रदान का सशक्त साधन है। मानव के उच्चतम अनुभूतियो का परिचायक है। और समाज के भावात्मक उन्नयन का महत्वपूर्ण माध्यम है। अतः कला शिक्षण से बालको को मानवीय गुणो और मुल्यो से सुशोभित किया जा सकता है।

5. **राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीयता का विकास:-** बालक में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय अवबोध जाग्रत करना शिक्षा का कार्य है। कला के माध्यम से बालक को प्रत्येक समाज और देश की सभ्यता, सस्कृती, रुचि, अनुभुती, जीवन दर्शन से परिचित कराया जा सकत है।

6. **कल्पना का विकास:-** कल्पना सृजनात्मकता का मुल है और सृजन कला का परिणाम है कला बालको की कल्पना शक्ति का विकास करती है।

7. **आनन्द की अनुभूती:-** चित्र बनाना, नृत्य करना, गाना गाना (Sing a Song) आदि बच्चो के आत्मिक जीवन का अंश है। बच्चे अपने चारो

ओर की दुनिया मे जीते है, सृजन करते है और सौन्दर्यानुभूती का रसानुभूती मे आनन्द लेते है।

8. **भावात्मक एकता का विकासः-** भावात्मक एकता वस्तुत एक सामुदायिक भावना है। भावात्मक एकता का अर्थ है की किसी देश के नागरीक एकता का बोध करे सुख-दुख में साझीदार हो एक साथ मिलकर कल्याण की भावना से अग्रसर हो कला बालक के भावात्मक पक्ष का विकास करती है बालक भाषा धर्म जाती तथा भौगौलिक इकाई से ऊपर उठकर स्वयं को राष्ट्र विशेष का नागरिक समझते है। कला विविधता मे एकता के दर्शन कराती है।

9. **बौद्धिक विकासः-** बुद्धि का सम्बन्ध तथ्यो विचारो और सिद्धान्तो से है कला मे किसी ना किसी मात्रा में तथ्यो विचारो और सिद्धान्तो का समावेश भी किया जाता है। तथ्यो विचारो और सिद्धान्तो के आधार पर ही वस्तुओ और घटनाओ का चित्रण होता है। रेखाओ के द्वारा चित्र का निर्माण करते समय बालक को अपनी बुद्धि का प्रयोग करना होता है। बालक लक्षणो और तथ्वो को समझता है इससे उसका बौद्धिक विकास होता है।

10. **व्यक्तित्व का निर्माणः-** कला व्यक्तित्व के निर्माण एवं विकास में योगदान देती है।

Raju Kumar
(Guest Faculty)
Mob. No.- 8797037111
Woman's Training College
Mob No.- rajumanjay@gmail.com
B.Ed. 1st Year.
EPC – 2 (Drama Art and Education)
Topic:- विद्यालयीय बालको के लिए कला का महत्व